Bihar Board Class 8 Hindi Notes Chapter 9 अशोक का शास्त्र -त्याग

अशोक का शास्त्र-त्याग

स्थान : मैदान जिसमें मगध के सैनिकों का शिविर है। बीच में एक पताका पहरा रही है वहीं पर सम्राट अशोक का शिविर है। संध्या बीत चुकी है। तारे चमकने लगे हैं। दीपक जल रहे हैं। अशोक टहलते हुए दिखते हैं उनके मुख पर चिन्ता की छाया है कुछ सोचते हुए आसन पर बैठ जाते हैं।

अशोक सोचते हुए (स्वत:)-चार साल से युद्ध हो रहा है। लाखों मारे गये, लाखों घायल हुए लेकिन कलिंग नहीं जीता जा सका है।

उसी समय द्वारपाल-गुप्तचर आकर संवाद देता है कि कलिङ्ग के महाराज लड़ाई में मारे जा चुके । लेकिन कलिंग का दरवाजा अभी भी बंद है। " अशोक उत्तेजित होकर काल स्वयं सेना का संचालन करते हैं।

मगध की सेना कलिंग के द्वार पर अस्त्र-शस्त्र से सजी हैं और सेनाओं,
को कलिंग विजय या मृत्यु प्राप्त करने को ललकारते हैं। उसी समय
फाटक

खुलता है, हजारों स्त्रियाँ वीर वेश में द्वार से बाहर हो मगध की सेना को चुनौतियाँ देती हैं। लेकिन सम्राट अशोक स्त्रियों पर हाथ उठाना, उससे युद्ध करना उचित नहीं मानकर शस्त्र त्याग कर युद्ध नहीं करने की प्रतिज्ञा लेते हैं।

पद्मा भी उन्हें क्षमा कर देती है। अशोक बौद्ध धर्म स्वीकार कर लेते

- बौद्ध भिक्षु उन्हें
- बुद्धं शरणं गच्छामि।
- धर्मं शरणं गच्छामि।
- संघं शरणं गच्छामि।
- का पाठ पढ़ाया।

https://www.evidyarthi.in/